

पाठ २

तीन बुद्धिमान

पाठ का सारांश

यह एक रोचक लोककथा है जो तीन बुद्धिमान भाइयों की तीव्र बुद्धि और पैनी दृष्टि की कहानी है। एक निर्धन व्यक्ति अपने बेटों को बचपन से यही सिखाता है कि धन की बजाय ज्ञान और समझ सबसे बड़ा खजाना है। पिता की मृत्यु के बाद तीनों भाई दुनिया देखने निकल पड़ते हैं। यात्रा के दौरान वे एक नगर पहुँचते हैं, जहाँ वे केवल चिन्हों के आधार पर एक ऊँट के बारे में अनेक सटीक जानकारियाँ दे देते हैं—जैसे ऊँट एक आँख से नहीं देख सकता, उस पर एक महिला और बच्चा सवार थे, आदि।

घोड़े पर सवार ऊँट का मालिक यह सब सुनकर उन्हें चोर समझ लेता है और राजा के पास ले जाता है। राजा भी पहले भाइयों पर संदेह करता है लेकिन जब वे एक बंद पेटी में रखी वस्तु का भी सटीक अनुमान (एक कच्चा अनार) बिना देखे लगा लेते हैं, तब राजा उनकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित हो जाता है और उन्हें निर्दोष मान लेता है।

मुख्य संदेश: यह कहानी सिखाती है कि तर्क, अवलोकन शक्ति और गहरी समझ से किसी भी समस्या का हल निकाला जा सकता है। यह धन से अधिक बुद्धि और ज्ञान के महत्व को उजागर करती है।

शब्दार्थ:

- **निर्धन** - जिसके पास धन नहीं है, गरीब, दरिद्र, कंगाल
- **संचित** - जो संग्रहित किया गया हो, एकत्रित, संग्रहित
- **पूर्णत** - पूरी तरह से, संपूर्णता में
- **पैनी दृष्टि** - सूक्ष्म और तेज़ देखने की क्षमता, गहरी नज़र
- **सुरक्षा कर्मियों** - सुरक्षा देने वाले कर्मचारी, रक्षक
- **रेवड़ों** - पशुओं का झुंड (विशेषतः भेड़-बकरियाँ)
- **साहस** - डर के बिना कार्य करने की शक्ति, हिम्मत, वीरता
- **संभव** - मुमकिन, साध्य
- **जाँच** - सत्य की पुष्टि के लिए जांच-पड़ताल, परीक्षण, छानबीन
- **बुद्धिमान** - जो समझदार और ज्ञानी हो, चतुर, होशियार, ज्ञानी
- **तीव्र बुद्धि** - तेज़ और स्पष्ट सोचने की क्षमता, कुशाग्र बुद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि
- **उत्तम** - बहुत अच्छा, श्रेष्ठ, बेहतरीन, सर्वोत्तम
- **चूँकि** - इस कारण
- **घुमक्कड़ी** - लगातार घूमने की आदत या जीवनशैली, भ्रमण
- **संकेत** - किसी बात की ओर इशारा या जानकारी देना, इशारा
- **कोष** - संग्रह किया हुआ धन या जानकारी का भंडार, खजाना, संग्रह

पाठ से

मेरी समझ से

(क) लोककथा के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन सा है? उसके सामने★तारा () बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं।

1. लोककथा में पिता ने अपने बेटों से 'धन संचय करने' को कहा। उनकी इस बात का क्या अर्थ हो सकता है?

- खेती-बारी करना और धन इकट्ठा करना
- पैनी दृष्टि और तीव्र बुद्धि का विकास करना ★
- ऊँट का व्यापार करना
- गाँव छोड़कर किसी नगर में जाकर बसना

2. तीनों भाइयों ने अपने ज्ञान और बुद्धि का उपयोग करके ऊँट के बारे में बहुत-कुछ बता दिया। इससे क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

- बुद्धि का प्रयोग करके ऊँट के बारे में सब-कुछ बताया जा सकता है।
- समस्या को सुलझाने के लिए ध्यान से निरीक्षण करना महत्वपूर्ण है। ★
- किसी व्यक्ति का ज्ञान, बुद्धि और धन ही सबसे बड़ी ताकत है। ★
- ऊँट के बारे में जानने के लिए दूसरों पर भरोसा करना चाहिए।

3. राजा ने भाइयों की बुद्धिमत्ता पर विश्वास क्यों किया?

- भाइयों ने अपनी बात को तर्क के साथ समझाया। ★
- राजा को ऊँट के स्वामी की बातों पर संदेह था।
- राजा ने स्वयं ऊँट और पेटी की जाँच कर ली थी।
- भाइयों ने राजा को अपनी बात में उलझा लिया था।

4. लोककथा के पात्रों और घटनाओं के आधार पर, राजा के निर्णय के पीछे कौन-सा मूल्य छिपा है?

- दोषी को कड़ा से कड़ा दंड देना हर समस्या का सबसे बड़ा समाधान है।
- अच्छी तरह जाँच किए बिना किसी को दोषी नहीं ठहराना चाहिए। ★
- राजा की प्रत्येक बात और निर्णय को सदा सही माना जाना चाहिए।
- ऊँट की चोरी के निर्णय के लिए सेवक की बुद्धि का उपयोग करना चाहिए।

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने भिन्न-भिन्न उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर क्यों चुने।

उत्तर: मैंने ये उत्तर इसलिए चुने क्योंकि

1. लोककथा में पिता अपने बेटों को धन की जगह ज्ञान और बुद्धि को संचित करने की सलाह देते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उनका उद्देश्य समझ और विचार शक्ति को बढ़ाना था, न कि भौतिक धन इकट्ठा करना।
2. भाइयों ने ऊँट के बारे में केवल निशानों और संकेतों से जानकारी प्राप्त की, जिससे यह सिद्ध होता है कि समस्याओं को हल करने के लिए ध्यानपूर्वक अवलोकन और सोच-विचार जरूरी होता है।
3. राजा ने भाइयों की परीक्षा खुद ली और यह जानने के बाद कि वे बिना देखे चीजों को समझ सकते हैं, उसने उनकी बुद्धिमत्ता पर विश्वास किया। उन्होंने जो भी कहा, उसका तर्क भी दिया—इसीलिए मैंने उन उत्तरों को सही माना जिनमें सोच, तर्क और निष्पक्ष जाँच को प्राथमिकता दी गई।
4. राजा ने पहले तीनों भाइयों को ऊँट चोरी का दोषी माना, लेकिन जल्दबाज़ी में कोई दंड नहीं दिया। उसने उनकी बुद्धिमत्ता की परीक्षा ली और जब वह स्वयं उनके उत्तरों की सत्यता से आश्वस्त हो गया, तब जाकर उन्हें निर्दोष घोषित किया। इससे यह सीख मिलती है कि किसी भी निर्णय से पहले सत्य की जांच करना आवश्यक है।

पंक्तियों पर चर्चा

पाठ में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए—

(क) “रूपये-पैसे के स्थान पर तुम्हारे पास पैनी दृष्टि होगी और सोने-चाँदी के स्थान पर तीव्र बुद्धि होगी। ऐसा धन संचित कर लेने पर तुम्हें कभी किसी प्रकार की कमी न रहेगी और तुम दूसरों की तुलना में उन्नीस नहीं रहोगे।”

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि भौतिक धन से अधिक मूल्यवान ज्ञान, बुद्धि और अवलोकन शक्ति होती है। यदि किसी के पास समझने की गहराई और सही निर्णय लेने की क्षमता है, तो वह जीवन में सफल हो सकता है। ऐसा व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में कमी महसूस नहीं करता और समाज में सम्मानित होता है।

(ख) “हर वस्तु और स्थिति को पूर्णतः समझने और जानने का प्रयास करो। कुछ भी तुम्हारी दृष्टि से न बच पाए।”

उत्तर: इस पंक्ति से यह सीख मिलती है कि किसी भी परिस्थिति को हल करने के लिए हमें सतर्क रहकर चारों ओर ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। गहराई से देखने, सोचने और समझने की आदत व्यक्ति को ज्ञानी और सफल बनाती है।

(ग) “हमने अपने परिवेश को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है।”

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है कि तीनों भाइयों ने छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने और उन्हें समझने की आदत बहुत पहले से विकसित की थी। यह उनकी साधना, अभ्यास और मेहनत का फल था, जिससे वे बिना देखे ही सच्चाई तक पहुँच सके। यह पंक्ति निरंतर अभ्यास और अनुभव के महत्व को दर्शाती है।

मिलकर करें मिलान

इस लोककथा में से चुनकर कुछ वाक्य नीचे स्तंभ 1 में दिए गए हैं। उनके भाव या अर्थ से मिलते-जुलते वाक्य स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 के वाक्यों को स्तंभ 2 के उपयुक्त वाक्यों से सुमेलित कीजिए—

स्तंभ 1	स्तंभ 2
<ol style="list-style-type: none"> कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे। घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा। बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। लोगों के आश्वर्य का कोई ठिकाना न था। 	<ol style="list-style-type: none"> घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा। थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया। लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्वर्य व्यक्त करना कठिन था। बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं। हमें चाहे जहाँ भी हों, हमें खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा।

उत्तर:

स्तंभ 1	स्तंभ 2
<ol style="list-style-type: none"> कुछ समय पश्चात् पिता चल बसे। हम कहीं भी क्यों न हों, भूखे नहीं मरेंगे। घुड़सवार ने तीनों भाइयों को शंका की दृष्टि से देखा। बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम कुछ भी अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। लोगों के आश्वर्य का कोई ठिकाना न था। 	<ol style="list-style-type: none"> थोड़े समय के बाद पिता का देहांत हो गया। हमें चाहे जहाँ भी हों, खाने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाएगा। घोड़े पर सवार व्यक्ति ने तीनों भाइयों को अविश्वास से देखा। बचपन से ही हमें आदत हो गई है कि हम हर छोटी-बड़ी वस्तु पर ध्यान अवश्य देते हैं। लोग इतने अचंभित थे कि उनका आश्वर्य व्यक्त करना कठिन था।

सोच-विचार के लिए

लोककथा को एक बार फिर ध्यान से पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए—

(क) तीनों भाइयों ने बिना ॐ को देखे उसके विषय में कैसे बता दिया था?

उत्तर: उन्होंने रास्ते पर मिले चिन्हों, घास की दिशा, पैरों के निशानों, और पेटी की आवाज़ जैसे संकेतों का सूक्ष्म निरीक्षण किया। इसी तीव्र बुद्धि और अवलोकन शक्ति से उन्होंने ॐ, सवारों और वस्तुओं के बारे में सही अनुमान लगाया।

(ख) आपके अनुसार इस लोककथा का सबसे अधिक महत्वपूर्ण हिस्सा बात को दिया गया है— तार्किक सोच, अवलोकन या सत्यवादिता? लोककथा के आधार पर समझाइए।

उत्तर: अवलोकन सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि पूरी कहानी में भाइयों ने हर घटना, वस्तु और निशान का गहराई से निरीक्षण किया और वहीं से निष्कर्ष निकाला। उन्होंने बिना देखे सब कुछ जान लिया, यह उनकी पैनी दृष्टि और अभ्यास का परिणाम था।

(ग) लोककथा में राजा ने पहले भाइयों पर संदेह किया लेकिन बाद में उन्हें निर्दोष माना। राजा की सोच क्यों बदली?

उत्तर: जब भाइयों ने बिना देखे पेटी में अनार होने की सटीक जानकारी दी और हर उत्तर का तार्किक स्पष्टीकरण दिया, तो राजा उनकी बुद्धिमत्ता से प्रभावित हुआ और समझ गया कि वे निर्दोष हैं।

(घ) ऊँट के स्वामी को भाइयों पर तुरंत संदेह क्यों हुआ? आपके विचार से उसे क्या करना चाहिए था जिससे उसे अपना ऊँट मिल जाता?

उत्तर: स्वामी को लगा कि यदि वे ऊँट को देखे बिना इतना सब जान गए तो निश्चित ही उन्होंने ऊँट चुराया है। उसे पहले उनकी बात को ध्यान से सुनना चाहिए था और उनके दिए संकेतों के अनुसार जाकर ऊँट को खोजने का प्रयास करना चाहिए था।

(ङ) पिता ने बेटों को "दूसरे प्रकार का धन" संचित करने की सलाह क्यों दी? इससे पिता के बारे में क्या-क्या पता चलता है?

उत्तर: उन्होंने यह इसलिए कहा क्योंकि उनके पास भौतिक संपत्ति नहीं थी। वे समझते थे कि ज्ञान, बुद्धि और अनुभव जीवन की सबसे बड़ी पूँजी हैं। इससे पता चलता है कि पिता दूरदर्शी, शिक्षित और समझदार थे।

(च) राजा ने भाइयों की परीक्षा लेने के लिए पेटी का उपयोग किया। इस परीक्षा से राजा के व्यक्तित्व और निर्णय शैली के बारे में क्या-क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

उत्तर: राजा धैर्यवान, बुद्धिमान और न्यायप्रिय था। उसने बिना प्रमाण किसी को दंड नहीं दिया और स्वयं जाँच-पड़ताल करके सच्चाई जानने की कोशिश की। वह जिज्ञासु और निष्पक्ष शासक था।

(छ) आप इस लोककथा के भाइयों की किस विशेषता को अपनाना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर: मैं उनकी अवलोकन क्षमता और धैर्य को अपनाना चाहूँगा, क्योंकि यह विशेषता किसी भी परिस्थिति को समझने और सही निर्णय लेने में मदद करती है। यह जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक है।

अनुमान और कल्पना से

अपने समूह में मिलकर चर्चा कीजिए—

(क) यदि राजा ने बिना जाँच के भाइयों को दोषी ठहरा दिया होता तो इस लोककथा का क्या परिणाम होता?

उत्तर: यदि राजा ने बिना जाँच किए भाइयों को चोर मान लिया होता, तो निर्दोष लोगों को सज़ा मिल जाती। इससे राजा की बुद्धिमानी पर सवाल उठते और प्रजा का भरोसा भी राजा पर से उठ जाता।

(ख) यदि भाइयों ने अनार के बारे में सही अनुमान न लगाया होता तो लोककथा का अंत किस प्रकार होता? अपने विचार व्यक्त करो।

उत्तर: यदि भाइयों ने अनार के बारे में गलत अनुमान लगाया होता, तो राजा को लगता कि वे झूठ बोल रहे हैं। शायद उन्हें सज़ा मिल जाती और राजा यह कभी नहीं समझ पाता कि लोग बिना देखे भी अपनी समझ और ज्ञान से बहुत कुछ जान सकते हैं।

(ग) लोककथा में यदि तीनों भाई ऊँट को खोजने जाते तो उन्हें कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था?

उत्तर: यदि तीनों भाई ऊँट को खोजने निकलते, तो उन्हें धूप, गर्मी, भूख-प्यास और जंगल के जानवरों जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता था। साथ ही, रास्ता भटकने का भी डर रहता।

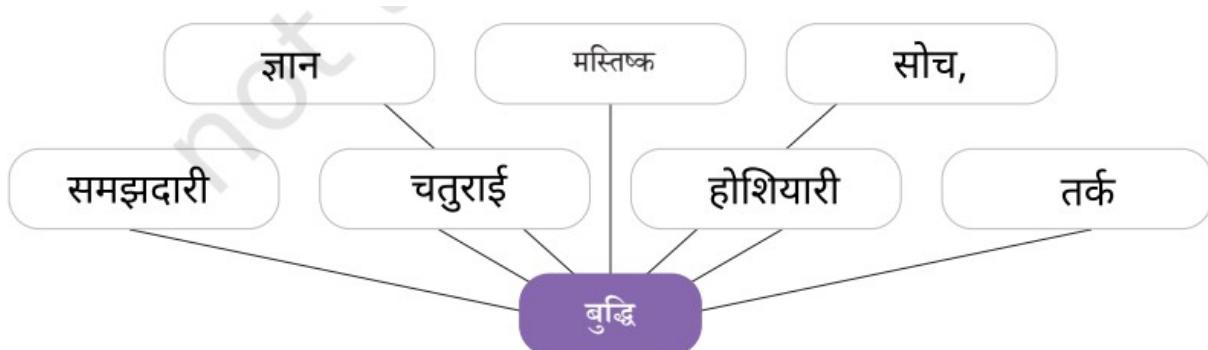
(घ) यदि राजा के स्थान पर आप होते तो भाइयों की परीक्षा लेने के लिए किस प्रकार के सवाल या गतिविधियाँ करते? अपनी कल्पना साझा करें।

उत्तर: यदि मैं राजा होता, तो मैं उनसे कोई और रहस्यमयी चीज़ के बारे में अनुमान लगाने को कहता, जैसे—किस पेड़ के नीचे खजाना छिपा है या किस जानवर के पैरों के निशान ज़मीन पर हैं। मैं यह भी देखता कि वे अपने दिमाग और तर्क का प्रयोग कैसे करते हैं।

शब्दों से जुड़े शब्द

नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में 'बुद्धि' से जुड़े शब्द अपने समूह में चर्चा करके लिखिए—

उत्तर:



लोककथा सुनाना

लोककथा के लिखित रूप में आने से पहले कहानियों का प्रचलन मौखिक रूप में ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता था। इसमें कहानी सुनाने-सुनाने और याद रखने की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। कहानी कहने या सुनाने वाला इस तरह से कहानी सुनाता था कि सुनने वालों को रोमांच लगे। इसमें कहानी सुनने वालों को आनंद तो आता ही था, कब उन्हें याद हो जाती थी।

अब आप अपने समूह के साथ मिलकर इस लोककथा को रोचक ढंग से सुनाइए। लोककथा को प्रभावशाली और रोचक रूप में सुनाने के लिए नीचे कुछ सुझाव दिए गए हैं जो लोककथा को और भी आकर्षक बना सकते हैं—

कथा सुनाना

- **स्वर में उतार-चढ़ाव**— लोककथा सुनाते समय स्वर में या आवाज़ में उतार-चढ़ाव से उत्साह और रहस्य का निर्माण करो। जब लोककथा में कोई रोमांचक या रहस्यमय पल हो तो स्वर धीमा या तीव्र कर सकते हैं।
- **भावनाओं की अभिव्यक्ति**— भावनाओं को प्रकट करने के लिए सही स्वर का चयन करें— जैसे— खुशी, दुख, आश्र्य आदि को स्वर के माध्यम से दर्शाएँ।

- **लोककथा के पात्रों के लिए अलग-अलग स्वर**— जब लोककथा में अलग-अलग पात्र हों तो हर पात्र के लिए अलग स्वर (ऊँचा, नीचा, तेज़, धीमा आदि) का उपयोग किया जा सकता है ताकि उन्हें पहचाना जा सके।
- **हाव-भाव और शरीर का उपयोग**— जब आप लोककथा में किसी घटना का वर्णन करें तब शारीरिक मुद्राओं और चेहरे के भावों का उपयोग किया जा सकता है।
- **हास्य का प्रयोग**— जब कोई हास्यपूर्ण या आनंददायक दृश्य हो तो चेहरे की मुस्कान और हँसी के साथ उसे प्रस्तुत करें।
- **विवरणात्मक भाषा का उपयोग**— लोककथा में वर्णित स्थानों और पात्रों को इस प्रकार प्रस्तुत करें कि श्रोता उनकी छवि अपने मन में बना सकें।
- **रोचक मोड़**— एक-दो बार लोककथा के रोमांचक मोड़ों पर थोड़ी देर के लिए रुकें या श्रोताओं में उत्सुकता बने रहे, जैसे— “क्या आप जानना चाहते हैं कि आगे क्या हुआ?”
- **संवादों को स्पष्ट और प्रासंगिक बनाना**— पात्रों के संवाद इस तरह से प्रस्तुत करें कि वे मौलिक लगें।

कारक

नीचे दिए गए वाक्य को ध्यान से पढ़िए—

“भाइयों ने जवाब दिया।”

यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा है न? अब नीचे दिए गए वाक्य को पढ़िए—

“भाइयों ने जवाब दिया।”

इन दोनों वाक्यों में अंतर समझ में आया? बिलकुल सही पहचाना आपने! दूसरे वाक्य में 'ने' शब्द 'भाइयों' और 'जवाब दिया' के बीच संबंध को जोड़ रहा है। संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होने वाले शब्दों के ऐसे रूपों को कारक या परसर्ग कहते हैं। कारक शब्दों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

ने, को, पर, से, के द्वारा, का, में, के लिए, की, के, हे, हो, अरे

नीचे दिए गए वाक्यों में कारक लिखकर इन्हें पूरा कीजिए—

1. "हमने तो तुम्हारा _____ देखा तक नहीं", भाइयों _____ परेशान होते हुए कहा।
2. "मैं अपने रेवड़ों _____ पहाड़ों _____ लिए जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे _____ साथ एक बड़े-से ऊँट _____ मेरे पीछे-पीछे आ रही थी।"
3. राजा _____ उसी समय अपने मंत्री _____ बुलाया और उसके कान _____ कुछ फुसफुसाया।
4. यह सुनकर राजा _____ पेटी _____ पास लाने _____ आदेश दिया। सेवकों _____ तुरंत आदेश पूरा किया। राजा _____ सेवकों _____ पेटी खोलने _____ लिए कहा।

उत्तर:

1. "हमने तो तुम्हारा ऊँट को देखा तक नहीं", भाइयों ने परेशान होते हुए कहा।

👉 कारक: को, ने

- "मैं अपने रेवड़ों को पहाड़ों पर लिए जा रहा था", उसने कहा, "और मेरी पत्नी मेरे छोटे-से बेटे के साथ एक बड़े-से ऊँट पर मेरे पीछे-पीछे आ रही थी।"
- 👉 कारक: को, पर, के साथ, पर
- राजा ने उसी समय अपने मंत्री को बुलाया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया।
- 👉 कारक: ने, को, में
- यह सुनकर राजा ने पेटी को पास लाने का आदेश दिया। सेवकों ने तुरंत आदेश पूरा किया। राजा ने सेवकों से पेटी खोलने के लिए कहा।
- 👉 कारक: ने, को, ने, से, के लिए

सूचनापत्र

कल्पना कीजिए कि आप इस लोककथा के वह घुड़सवार हैं जिसका ऊँट खो गया है। आप अपने ऊँट को खोजने के लिए एक सूचना कागज पर लिखकर पूरे शहर में जगह-जगह चिपकाना चाहते हैं। अपनी कल्पना और लोककथा में दी गई जानकारी के आधार पर एक सूचनापत्र लिखिए।

उत्तर:

सूचनापत्र

🔴 खोया हुआ ऊँट! कृपया ध्यान दें!

मैं एक घुड़सवार हूँ और मेरा ऊँट रास्ते में मुझसे बिछुड़ गया है। मैं अपने रेवड़ों के साथ पहाड़ों की ओर जा रहा था और मेरी पत्नी अपने छोटे बेटे के साथ उस ऊँट पर सवार थी। किसी कारणवश उनका ऊँट पीछे रह गया और रास्ता भटक गया।

👉 ऊँट की पहचान इस प्रकार है:

- वह बहुत बड़ा है।
- उसकी एक आँख खराब है, वह एक ओर से नहीं देख सकता।
- उस पर एक महिला और एक छोटा बच्चा सवार थे।

अगर किसी को यह ऊँट या उससे संबंधित कोई जानकारी मिले तो कृपया तुरंत नीचे दिए गए पते या स्थान पर संपर्क करें।

ईनाम दिया जाएगा।

- 📍 संपर्क स्थान: नगर चौकी / राजा का दरबार
- 📞 संपर्क सूत्र: [यहाँ अपना नाम या संकेत भरें]
- 🔔 आपकी थोड़ी-सी मदद मेरे परिवार को फिर से मिला सकती है!
- एक चिंतित घुड़सवार

पाठ से आग

आपकी बात

1. लोककथा में तीन भाइयों की पैनी दृष्टि की बात कही गई है। क्या आपने कभी अपनी पैनी दृष्टि का प्रयोग किसी समस्या को हल करने के लिए किया है? उस समस्या और आपने द्वारा दिए गए हल के विषय में लिखिए।

उत्तर: हाँ, एक बार मेरी किताब स्कूल में कहीं खो गई थी। सबको लगा कि कोई ले गया है, लेकिन मैंने ध्यान से अपनी टेबल और बैग के पास देखा और पाया कि किताब नीचे खिसककर एक कोने में चली गई थी। मेरी पैनी दृष्टि और शांत सोच ने समस्या को हल कर दिया।

2. लोककथा में बताया गया है कि भाइयों ने "बचपन से हर वस्तु पर ध्यान देने की आदत डाली।" यदि आपने ऐसा किया है तो आपको अपने जीवन में इसके क्या-क्या लाभ मिलते हैं?

उत्तर: हाँ, मुझे हर बात को ध्यान से देखने की आदत है। इससे मुझे पढ़ाई में बहुत मदद मिलती है। मैं जल्दी चीजें समझ लेता हूँ और भूलता नहीं। कभी-कभी मैं अपने दोस्तों की छोटी गलतियाँ भी पकड़ लेता हूँ जिससे वे सुधार कर पाते हैं।

3. लोककथा में भाइयों को यात्रा करते समय अनेक कठिनाइयाँ आई, जैसे— भूख, थकान और पैरों में छाले। आप अपने दैनिक जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करते हैं? लिखिए।

उत्तर: कभी-कभी स्कूल समय पर पहुँचने में परेशानी होती है क्योंकि मेरा घर दूर है। कभी होमवर्क समय पर नहीं हो पाता या परीक्षा में डर लगता है। लेकिन मैं कोशिश करता हूँ कि इन सबका सामना हिम्मत और समय प्रबंधन से कर सकूँ।

4. भाइयों ने बिना देखे ही ऊंट के बारे में सही-सही बातें बताई। आपको क्या लगता है कि अनुभव और समझ से देखे बिना भी सही निर्णय लिया जा सकता है? क्या आपने कभी ऐसा किया है?

उत्तर: हाँ, कभी-कभी अनुभव और समझ इतनी गहरी होती है कि बिना देखे भी हम सही बात का अनुमान लगा सकते हैं। एक बार मेरे दोस्त ने झूठ बोलने की कोशिश की थी, लेकिन उसके व्यवहार से मैंने समझ लिया और उसे सच बोलने के लिए समझाया।

5. जब ऊंट के स्वामी ने भाइयों पर शंका की तो भाइयों ने बिना गुस्सा किए शांति से उत्तर दिया। क्या आपको लगता है कि कभी किसी को संदेह होने पर हमें भी शांत रहकर उत्तर देना चाहिए? क्या आपने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है?

उत्तर: बिल्कुल। गुस्से से बात बिगड़ती है। एक बार मुझ पर किसी चीज़ को तोड़ने का झूठा आरोप लगा, लेकिन मैंने गुस्से के बजाय शांति से बताया कि मैं उस समय वहाँ नहीं था। बाद में सच्चाई सामने आई और सबने मुझसे माफ़ी मांगी।

6. राजा ने भाइयों की बुद्धिमानी देखकर बहुत आश्र्य व्यक्त किया। क्या आपको कभी किसी की सोच, समझ या किसी विशेष कौशल को देखकर आश्र्य हुआ है? क्या आपने कभी किसी से कुछ ऐसा सीखा है जो आपके लिए बिलकुल नया और चौंकाने वाला हो?

उत्तर: हाँ, मेरी एक सहपाठी बहुत सुंदर चित्र बनाती है। जब मैंने पहली बार उसका चित्र देखा, तो मैं चकित रह गया। मैंने उससे चित्र बनाना सीखना शुरू किया और अब मुझे भी चित्रकारी में आनंद आने लगा है।

7. लोककथा में पिता ने अपने बेटों को यह सलाह दी कि वे समझ और ज्ञान जमा करें। क्या आपको कभी किसी बड़े व्यक्ति से ऐसी कोई सलाह मिली है जो आपके जीवन में उपयोगी रही हो? क्या आप भी अपने अनुभव से किसी को ऐसी सलाह देंगे?

उत्तर: हाँ, मेरे दादा जी हमेशा कहते हैं— "जो भी करो, पूरे मन से करो।" उनकी यह बात मैंने हमेशा ध्यान में रखी है। जब भी मैं कुछ करता हूँ, तो पूरी मेहनत और लगन से करता हूँ। मैं भी दूसरों को यही सलाह देता हूँ।

8. भाइयों ने अपने ऊपर लगे आरोपों के होते हुए भी सदा सच्चाई का साथ दिया। क्या आपको लगता है कि सदा सच बोलना महत्वपूर्ण है? भले ही स्थिति कठिन क्यों न हो? क्या आपको किसी समय ऐसा लगा है कि आपकी सच्चाई ने आपको समस्याओं से बाहर निकाला हो?

उत्तर: जी हाँ, सच्चाई सबसे बड़ी ताकत होती है। एक बार स्कूल में सबका होमर्क खो गया था, और कुछ बच्चों ने मुझ पर शक किया। मैंने सच-सच बताया कि मैंने अपना ही किया था, और बाद में होमर्क स्टाफ रूम में मिल गया। मेरी सच्चाई ने मुझे सबके सामने सम्मान दिलाया।

ध्यान से देखना-सुनना-अनुभव करना

"बचपन से ही हमें ऐसी आदत पड़ गई है कि हम किसी वस्तु को अपनी दृष्टि से नहीं चूकने देते। हमने वस्तुओं को पैनी दृष्टि से देखने और बुद्धि से सोचने के प्रयास में बहुत समय लगाया है।"

इस लोककथा में तीनों भाई आसपास की प्रत्येक वस्तु, घटना आदि को ध्यान से देखते, सुनते, सूँघते और अनुभव करते हैं अर्थात् अपनी ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का पूरा उपयोग करते हैं। ज्ञानेंद्रियाँ पाँच होती हैं— आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा। आइए देखें, कान से सुनकर, नाक से सूँघकर, जीभ से चखकर और त्वचा से स्पर्श करके हम किसी वस्तु के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं। आइए, अब एक खेल खेलते हैं जिसमें आपको अपनी इंद्रियों और बुद्धि का प्रयोग करने के अवसर मिलेंगे।

(क) 'हाँ' या 'नहीं' प्रश्न-उत्तर खेल

चरण—

- एक विद्यार्थी कक्षा से बाहर जाकर दिखाई देने वाली कोई एक वस्तु या स्थान चुनेगा। कक्षा के भीतर से भी कोई नाम चुना जा सकता है।
- विद्यार्थी वापस कक्षा में आएगा और उस नाम को एक कागज पर लिख लेगा, लेकिन ध्यान रहे, वह कागज पर लिखे नाम को किसी को न दिखाएगा।
- अन्य विद्यार्थी बारी-बारी से उस वस्तु का नाम पता करने के लिए प्रश्न पूछेंगे।

4. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर केवल "हाँ" या "नहीं" में दिया जाएगा।

उदाहरण के लिए—

- क्या इस वस्तु का उपयोग कक्षा में होता है?
 - क्या यह खाने-पीने की चीज़ है?
 - क्या यह लकड़ी से बनी है?
 - क्या यह बिजली से चलती है?
5. सभी विद्यार्थी अधिकतम 20 प्रश्न ही पूछ सकते हैं। इसलिए सोच-समझकर प्रश्न पूछने होंगे ताकि वे उस वस्तु का नाम पता कर सकें।
6. यदि 20 प्रश्नों के अंदर विद्यार्थी वस्तु का सही अनुमान लगा लेते हैं तो वे जीत जाएँगे।
7. अब दूसरे विद्यार्थी को बाहर भेजकर गतिविधि दोहराएँगे।
8. गतिविधि के अंत में सभी मिलकर इस खेल से जुड़े अपने अनुभवों के बारे में चर्चा करेंगे।

उत्तर: 'हाँ' या 'नहीं' प्रश्न-उत्तर खेल – अनुभव और निष्कर्ष:

यह खेल बहुत रोचक और सीखने वाला था। इसमें हमें केवल "हाँ" या "नहीं" उत्तरों के आधार पर वस्तु का नाम पहचानना था। इससे हमें समझ में आया कि सही प्रश्न पूछना और तर्कपूर्वक सोचना बहुत ज़रूरी होता है। इस खेल से हमारी सोचने की क्षमता, अवलोकन शक्ति और धैर्य भी बढ़ता है। हमें यह भी सीखने को मिला कि बिना पूरी जानकारी के भी, यदि हम सही दिशा में सोचें तो सही निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं।

उदाहरण अनुभव:

मैंने एक बार "पंखा" चुना था। मेरे साथियों ने पूछा:

- क्या यह कक्षा में उपयोग होता है? (हाँ)
- क्या यह बिजली से चलता है? (हाँ)
- क्या यह दीवार से जुड़ा होता है? (हाँ)

इसी तरह 6वें प्रश्न में उन्होंने "पंखा" सही पहचान लिया।

(ख) गतिविधि— "स्पर्श, गंध और स्वाद से पहचानना"

1. एक थैले या डिब्बे में (सावधानीपूर्वक एवं सुरक्षित) विभिन्न वस्तुएँ (जैसे— फूल, फल, मसाले, खिलौने, कपड़े, किताब, गुड़ आदि) रखें।
2. विद्यार्थियों को आँखों पर पट्टी बाँधकर केवल स्पर्श, गंध या स्वाद का उपयोग करके वस्तु की पहचान करनी होगी और उसका नाम बताना होगा।
3. बारी-बारी से प्रत्येक विद्यार्थी को बुलाकर उसकी आँखों पर पट्टी बाँधें।
4. उसे डिब्बे से एक वस्तु दी जाए जिसे छूकर, सूँघकर, चखकर पहचानने का प्रयास करेंगे।

5. सही पहचान करने के बाद विद्यार्थी बताएँगे कि उन्होंने उस वस्तु को कैसे पहचाना।
6. एक-एक करके सभी विद्यार्थियों को अलग-अलग वस्तुओं को पहचानने का अवसर मिलेगा।
7. अंत में सभी वस्तुओं को कक्षा में दिखाएँ और उनके बारे में चर्चा करें कि किस वस्तु को पहचानना आसान या कठिन लगा।

उत्तर: गतिविधि - "स्पर्श, गंध और स्वाद से पहचानना" - अनुभव और निष्कर्ष:

इस गतिविधि में हमें आँखें बंद कर केवल स्पर्श, गंध या स्वाद के आधार पर वस्तु की पहचान करनी थी। इससे हमने जाना कि हमारी ज्ञानेंद्रियाँ कितनी महत्वपूर्ण होती हैं। आँखें बंद होने पर बाकी इंद्रियाँ अधिक सक्रिय हो जाती हैं और हम सूंधकर, छूकर या चखकर भी वस्तु का सही अनुमान लगा सकते हैं। यह खेल मजेदार भी था और ज्ञानवर्धक भी।

उदाहरण अनुभव:

मेरी आँखों पर पट्टी बांधी गई और मुझे एक मसालेदार वस्तु दी गई। मैंने उसे सूंधा और उसकी तेज़ खुशबू से समझ गया कि वह "इलायची" थी। जब मैंने जवाब दिया, तो सब हैरान हो गए कि मैंने सिर्फ गंध से कैसे पहचाना।

आज की पहेली

आपने पढ़ा कि तीनों बिछुमान भाई किस प्रकार अपने अवलोकन से वे बातें भी जान जाते थे जो अन्य लोग नहीं जान पाते। अब आपके सामने कुछ पहेलियाँ प्रस्तुत हैं जहाँ आपको कुछ संकेत दिए जाएँगे। संकेतों के आधार पर आपको उत्तर खोजने हैं—

1. कौन है यह प्राणी?

- इसकी लंबी पॅछ होती है जो पेड़ों के शाखाओं के चारों ओर लिलिपटी रहती है।
- इसका मख्य आहार कट और छोटे जीव होते हैं जिन्हें यह चपके से पकड़ता है।
- यह प्राणी अपने परवेश में घल-मिल जाता है और अपनी रंगत को बदल सकता है।
- इसके पास तेज आँखें होती हैं जो चारों दिशाओं में देख सकती हैं।

उत्तर: गिरगिट (Chameleon)

कारण: गिरगिट की पूँछ लचीली होती है, यह रंग बदल सकता है, कीट खाता है और उसकी आँखें अलग-अलग दिशाओं में धूम सकती हैं।

2. रंगीन डिब्बे

एक मेज पर चार रंगीन डिब्बे बराबर-बराबर रखे हैं— लाल, हरा, नीला और पीला। बताइए पीले डिब्बे के बराबर में कौन-सा डिब्बा है? यिद—

- | | |
|---|--|
| <ul style="list-style-type: none"> • लाल डिब्बा नीले डिब्बे के पास है। • हरा डिब्बा पीले डिब्बे के पास नहीं है। | <ul style="list-style-type: none"> • पीला डिब्बा लाल डिब्बे के पास नहीं है। • हरा डिब्बा लाल डिब्बे के पास है। |
|---|--|

उत्तर : पीले डिब्बे के बराबर में हरा डिब्बा है।

कारण : लाल और नीला साथ हैं, हरा और पीला साथ नहीं हैं

लाल और पीला साथ नहीं हैं, हरा और लाल साथ हैं